Dr. P. D. Lele, Professor in Physics,
Reader's Row House No. 2,
Gujarat University Campus,
AHMEDABAD - 380 009

Email: pdlele@hotmail.com
Ph. 079-26305298, Mo. 09409288348

10-Sep-2016

विषय: स्कूलोंमें शिक्षण पद्धतीमें आमूलाग्र परिवर्तन तुरंत लागू करनेकी आवश्यकता

सादर प्रणाम।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (National Education Policy) तैयार करने हेतु, भारत सरकार के मानव संसाधन व विकास मंत्रालय (Ministry of Human Resource Development) ने ३० सितंबर २०१६ तक निम्न वेबसाइट पर सुझाव/ प्रस्ताव आमंत्रित किये हैं।
https://www.mygov.in/group-issue/inputs-draft-national-education-policy-2016/

मुझे अपने भारतवर्ष में शिक्षाके क्षेत्रमें खासकर भाषाएँ पढ़ाने की नीति व पद्धतीमें आमूलाग्र परिवर्तनकी आवश्यकता दिखाई देती है। मेरा निम्न प्रस्ताव स्कूली शिक्षा में भाषा सिखाने के सम्बन्ध में है।

मेरी आपसे नम्र बिनती है की आप ३-४ पन्ने का यह महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव शब्दशः पढें, और यदि आपको भी इसकी गंभीरता प्रतीत हो तो उसी वेबसाइट पर अवश्य लिखें या उसे अपने शब्दोंमें अलग से लिखकर वेबसाइट पर डाल दें।

वर्तमान स्थिति:-

छोटे बच्चों को तीन भाषाएं एक साथ पढ़ाने के कारण हो रहे अत्याचार

a) Play Group/ Nursery/ KG/ पहली कक्षा से ही हम, बच्चों को अंग्रेजी माध्यम में पढाने की होड में जुटे हुए हैं। बच्चों को अंग्रेजी अक्षर तथा उसके उच्चार दोनों याद करने पडते हैं। उनको शब्द का स्पेलिंग व अर्थ भी याद करना पडता है। अंग्रेजी उनकी मातृभाषा न होने के कारण बहुत कठिनाई होती है। हमारी शिक्षा पद्धति ने बच्चों का जीना दुष्कर कर दिया है।
b) बच्चोंको राज्य की भाषा (जैसे गुजरात में गुजराती) के अक्षर, शब्द, अर्थ वगैरह पहली कक्षा से ही पढ़ने पड़ते हैं।
c) हिंदी राष्ट्रभाषा होने से, वह भी पहली कक्षा से पढनी पड़ती है।
d) देहातों में सामान्य परिवारों में मातापिता दोनों निरक्षर होंने से बच्चे को तीन भाषाएँ पढाना मुश्किल होता है और टयूशन रखनी पडती है। शहरों के अमीर परिवारों में बड़ी मात्रा में मातापिता दोनों नौकरी करते हैं एवं व्यस्तता के कारण बच्चोंको टयूशन द्वारा ही पढ़वाते हैं। बच्चे का खेलकूद का समय पढने में ही व्यतीत होता है, और वह भाषाओं को ठीक से पढ नहीं पाता है। वह भाषा अध्ययन की घृणा करने लगता है।
e) आजकल ज्ञान साईंस तथा टेकनॉलोजीके माध्यमसे बहुत तेजीसे बढ रहा है। इस कारण भाषा पढ़ानेके लिए कम समय मिलता है।

भाषा पर प्रभुत्व/ पकड़ की आवश्यकता:-

विचार करने के लिए अच्छे शब्दसंग्रह की आवश्यकता होती है। शब्दों के आभाव में विचार संभव नहीं है। यदि हमें बुद्धिमान विचारवान नविन पीढ़ी निर्माण करनी है, जो विविध क्षेत्रोंमें नवसर्जन कर सके, तो भाषापर प्रभुत्व की आवश्यकता अनिवार्य है। जितने भी देशों ने बड़ी मात्रा में विज्ञान क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार प्राप्त किये हैं, उनके वैज्ञानिकोंने स्वभाषा में अध्ययन किया है। जाहिर है की स्वभाषा पर प्रभुत्व एवं विशाल शब्दसंग्रह यह अत्यावश्यक साधन है।

स्कूलों में विविध कक्षाओं में भाषाएँ पढाने की नयी पद्धति का सुझाव

देशमें मातृभाषा, हिंदी, संस्कृत तथा अंग्रेजी बहुतही आसानीसे अलग अलग कक्षाओंमें कैसे पढाई जानी चाहिए इसका ब्यौरा मैंने नीचे दिया है। समूचे देशमें इस पद्धति का विरोध होनेकी संभावना नहीं है।

1) कक्षा १ से कक्षा ३ तक बच्चोंको केवल राज्य भाषा (या जहाँ संभव हो, वहां मातृ भाषा) में ही पढ़ाएं। जब बच्चों को पहली बार स्कूल में पढाया जाता है तो मातृभाषा में ही पढाना चाहिए। बच्चे २-३ साल की उम्र में ही घर में या आस पास के लोगोंसे मातृभाषा में व्याकरण की जानकारी के बिना, शब्दों का अर्थ रटने के बिना ही, आसानी से शुद्ध भाषा बोलते हैं। मातृभाषा में पढ़ाने से उन्हें केवल अक्षर की पहचान तथा लिखने पर ही अधिक ध्यान केन्द्रित करना पडेगा।
2) कक्षा चौथी से हिन्दी पढ़ाना आरम्भ करें। इसके लिए केवल देवनागरी लिपि पर ध्यान केन्द्रित करना पडेगा और हिन्दी का व्याकरण पढना पडेगा। तब तक उन्हें शब्द, अर्थ, कविता, लेख पहले से ही मातृभाषा में आते होंगे।
3) कक्षा ७ वी में संस्कृत पढ़ाना आरम्भ करें। उन्होंने अब तक देवनागरी लिपि और हिंदी ज्ञात कर ली है। केवल संस्कृत व्याकरण सीखना पड़ेगा।
   कक्षा ७ वी से उन्हें अंग्रेजी भी शुरुआत से (a, b, c से) पढ़ाना आरम्भ करें।
4) ऊपर दी गयी व्यवस्था में विभिन्न भाषाओंकी/ लिपिकी पढ़ाई में तीन तीन साल का अंतर है। पहले मातृभाषा और वह लिपि, फिर हिंदी और देवनागरी लिपि, फिर संस्कृत (देवनागरी लिपि तो हिंदी संग आती ही होगी), और अंग्रेजी और वह लिपि ऐसी धीरे धीरे पढ़ाई जाए। इस तरह से पढ़ाने से शब्द, पाठ, कविता, निबंध, जो पूर्व कक्षा में पढ़ाए हैं, वही नयी भाषा/ लिपि में दोहराए जाएं, जिससे केवल नयी भाषा/ लिपि ही सीखना और भी आसान होगा। इससे छात्र, उसके माता-पिता, शिक्षक इन सबका बोझ बहुत हल्का होगा। और विद्यार्थी हँसते खेलते, अधिक परिश्रम बिना, आसानी से भाषाएं सीख पाएंगे।
5) मातृभाषा और उसकी लिपि में पढ़ने के कारण हमारी सभी भारतीय भाषाएं सशक्त होंगी और नया साहित्य निर्माण होगा। देश के सभी प्रान्तोंके के विभिन्न रहन-सहन, आहार, व्यवहार, विचार, रीति रिवाजों के प्रति समाज में जागृति उत्पन्न होगी। स्वाभिमान और गर्व की भावना होगी। छात्र मातृभाषा में सोचेगा और भारतीय दर्शन एवं संस्कृति से जुड़ा रहेगा। भारत में एक समान संस्कृत भाषा सभी देश में एकता की भावना उत्पन्न करेगी।
6) आजके उच्चशिक्षित साधन संपन्न युवक-युवति बड़ी मात्रा में अंग्रेजी माध्यम मे पढे हैं। आज समाज की २५-३० वर्ष उम्र की माँ, जिसका बच्चा ५ साल का है, उसे अंग्रेजी माध्यम मे ही दाखिला देना चाहती

है। वह माँ खुद १९८५-१९९० मे जन्मी हुई तथा १९९०-१९९५ मे पहली कक्षा से अंग्रेजी माध्यम मे पढी हुई है। उसे अपनी मातृभाषा के साहित्य की जानकारी बहुत कम है और उसे मातृभाषा मे पढने लिखने मे बिलकुल रुची नही है। उसे मातृभाषा मे पढने का आनंद एवं भाषा का सौंदर्य पता ही नही तथा उसके फायदों का आकलन ही नही है।

आजके दादा-दादी, नाना-नानी जो ५०-७५ साल उम्रके हैं, वे मातृभाषा माध्यम मे पढे हैं और उन्हे मातृभाषाकी सरलता एवं सांस्कृतिक मूल्य पता है। लेकिन आजके २५-३० वर्ष उम्रके माता-पिता को बच्चोंको मातृभाषा माध्यम मे पढानेके लीए प्रवृत्त करना बहुतही मुश्किल और धीरे धीरे असंभव होता जा रहा है।

सभ्यता, संस्कृति एवं धर्म की वाहिका भाषा होती है। यदि हमारी भाषा ही नहीं रही, तो हमारी संपूर्ण सभ्यता, धर्म एवं संस्कृति का नाश हो जाने का डर है। हमें कम से कम २५-५० वर्ष यह कार्य करने में देरी हुई है। अभी तुरंत यह नही किया गया तो ५००० वर्षों का हमारा इतिहास, सभ्यता एवं संस्कृति याने हमारी पहचान ही मिट जाएगी।

इसीलिए हम सभीको बाकी सब कार्य छोडकर केंद्र सरकार, विभिन्न राज्य सरकार, केंद्र एवं राज्य शिक्षा मंडल, शालाएं इनके द्वारा सरकारी सहयोग एवं सहाय्य से स्कूलोंमें पहली कक्षासे छठ्ठी कक्षा तक मातृभाषा माध्यम मे ही पढवाना अनिवार्य करवाना होगा। यह कार्य हमें तुरंतही विना विलंब करना होगा क्योंकी २५ साल के बाद यह दादा-दादी, नाना-नानी की पीढी समाप्त हो जाएगी और मातृभाषा क्या होती है यह पता ही नही होगा।

<u>सम्पूर्ण देशमें संपर्क भाषा के रूप में संस्कृत भाषा प्रस्थापित करनेका तरीका :-</u>

हमारे देश के अलग-अलग प्रांतों के लोगों को एक दूसरे के साथ बातचीत करने में कठिनाई होती है क्योंकि सब की भाषा एक नहीं है। सामान्य नागरिक को ३,००० शब्दों की दैनंदिन जीवन में आवश्यकता होती है। यदि हम ऐसे शब्दों की सूची बनाएं और उसमें समानार्थी विभिन्न भारतीय भाषाओं में उपयोग किए जाने वाले अधिक चार शब्द (जो संस्कृत से हैं) स्कूलों में पढ़ाएँगे तो एक समान संस्कृत भाषा देश में सबको ज्ञात होगी। संपूर्ण देश में सभी लोगों को एक सामान्य भाषा आने से प्रवास में बातचीत की आसानी, सरकार के दस्तावेजों में आसानी होगी। हमारी भाषाओंके साहित्य का आपस में आदान-प्रदान तथा संपूर्ण देश में अच्छी शिक्षा पद्धति प्रस्थापित कर पाएंगे।

मै एक व्यावहारिक बहुभाषीय शब्दकोश तैयार कर रहा हूँ। और मैने रंगीन सचित्र तक्ते भी स्कूलोंमें पढाने हेतु तयार किये हैं।

मेरी आपसे नम्र बिनती है की
https://www.mygov.in/group-issue/inputs-draft-national-education-policy-2016/
वेबसाइट पर सुझाव ३० सितंबर २०१६ तक भेजकर स्कूलोंमें पहली कक्षासे छठ्ठी कक्षा तक मातृभाषा माध्यम मे ही पढवाना अनिवार्य करने का आग्रह करें।

आपका नम्र,

(पद्मनाभ दत्तात्रय लेले)

आप मेरे सुझावको और अच्छा बनाएँ या इसका उपयोग करें लेकिन बडी संख्यामें हमें यह योजना अपलोड करनी है तभी सफलता मिलेगी। आप मेरे सुझावको मित्रोंको फॉरवर्ड करके अपलोड करनेका आग्रह करें यह प्रार्थना।

<u>संलग्न:-</u> इस अपील की अंग्रेजी और गुजराथी सॉफ्ट कॉपियाँ तथा मेरे विस्तारसे लिखे निबंध।

****

यदि आप चाहें तो नीचे दिया संक्षिप्त प्रस्ताव ही upload कर सकते हैं। यह मेल आप अपने सर्व मित्रोंको भी भेजें, ताकि वे भी upload कर सकें।

****

<u>स्कूल में विभिन्न कक्षा में भाषा पढ़ाने की नयी नीति का प्रस्ताव, जिससे नयी पीढ़ी अधिक बुद्धिमान एवं विचारवान बनेगी तथा हमारी सभी भाषाएं सशक्त होंगी</u>

स्वभाषा में विचार करना व प्रस्तुत करना सहज होता है। अनेक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार विजेता स्वभाषा में ही पढ़े होते हैं।

१) पहले ३ वर्ष तक पढाई केवल मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में होनी चाहिए
२) ४ थी कक्षा से हिंदी भी एक भाषा के रूप में पढाई जाए
३) ७ वी कक्षा से संस्कृत एवं अंग्रेजी पढने का आरम्भ किया जाए

मातृभाषा और उसकी लिपि में पढ़ने के कारण हमारी सभी भारतीय भाषाएं सशक्त होंगी और नया साहित्य निर्माण होगा। देश के सभी प्रान्तोंके के विभिन्न रहन-सहन, आहार, व्यवहार, विचार, रीति रिवाजों के प्रति समाज में जागृति उत्पन्न होगी। स्वाभिमान और गर्व की भावना होगी। छात्र मातृभाषा में सोचेगा और भारतीय दर्शन एवं संस्कृति से जुड़ा रहेगा। भारत में एक समान संस्कृत भाषा सभी देश में एकता की भावना उत्पन्न करेगी।

सभ्यता, संस्कृति एवं धर्म की वाहिका भाषा होती है। यदि हमारी भाषा ही नहीं रही, तो हमारी संपूर्ण सभ्यता, धर्म एवं संस्कृति का नाश हो जाने का डर है। हमें कम से कम २५-५० वर्ष यह कार्य करने में देरी हुई है। अभी तुरंत यह नही किया गया तो ५००० वर्षों का हमारा इतिहास, सभ्यता एवं संस्कृति याने हमारी पहचान ही मिट जाएगी।